प्रकृतिपुरुषविवेकयोग

(प्रकृति पुरुष तथा चेतना)

अर्जुन उवाच।
प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च।
एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव।।१।।
श्रीभगवानुवाच।
इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।।२।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **प्रकृतिम्**=प्रकृति; **पुरुषम्**=भोक्ता; **च**=भी; **एव**=निस्सन्देह; **क्षेत्रम्**=क्षेत्र; **क्षेत्रज्ञम्**=क्षेत्र का ज्ञाता; **एव**=निस्सन्देह; **च**=भी; **एतत्**=यह सब; **वेदितुम्**=जानना; **इच्छामि**=चाहता हूँ; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **ज्ञेयम्**=जानने योग्य; **च**=भी; **केशव**=हे कृष्ण; **श्रीभगवान् उवाच**=श्रीभगवान् ने कहा; **इदम्**=यह; **शरीरम्**=देह; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **क्षेत्रम्**=क्षेत्र; **इति**=इस प्रकार; **अभिधीयते**=कहलाता है; **एतत्**=इसे; **यः**=जो; **वेत्ति**=जानता है; **तम्**=उसे; **प्राहुः**=कहते हैं; **क्षेत्रज्ञः**=क्षेत्रज्ञ (देही); **इति**=ऐसा; **तत् विदः**=उनके तत्त्व को जानने वाले ज्ञानीजन।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे कृष्ण! मैं प्रकृति, पुरुष, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ज्ञान और ज्ञान के